कलीसिया अध्याय 30

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **लूका 18:29-21:38**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (लूका 18:18-21:38) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]* **(श्रंखला "छ" का पुनरावलोकन)**

दो लोग साथ मिलकर श्रंखला छ: "मसीही विवाह" ***पुनरावलोकन*** करें।

(1) छोड़ना और मिलना। उत्पत्ति 2:24। इस कारण पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेगें।
(2) प्रेम और अगुवाई, इफिसियों 5:23,25 क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है और स्वयं ही देह का उद्धारकता है। हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।
(3) प्रेम करें और अधीन हों। तीतुस 2:4-5। ताकि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें; और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली, और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा होने पाए।
(4) झगड़े सुलझाएं। मत्ती 5:23-24। इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।
(5) विश्वासयोग्य बने रहें। नीतिवचन 3:3-4। कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हारा बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना। और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 13:1-38**

परिचय। यहून्ना 13:1-38 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के 5 कदमों को इस्तेमाल करें। यूहन्ना 12 से 18 मे यीशु मसीह के क्रूसीकरण से पहले के अन्तिम सात सप्ताहों का वर्णन किया गया है (30 ईसा. पश्चात के लगभग 15 अप्रेल से लेकर 30 मई तक का वर्णन)। यूहन्ना अध्याय 19 से 21 यीशु के धरती पर अन्तिम 40 दिनों का वर्णन करते हैं। यूहन्ना 13 अध्याय में फसह के पर्व के दौरान यीशु अपनी शिक्षाओं का प्रारम्भ करते हैं। यीशु एक दूसरे को प्रेम करने की शिक्षा प्रदान करते हैं और उस प्रेम को समझाने व दर्शाने के लिए वे अपने चेलों के पैरों को धोते हैं।

लूका की लेखन शैली से यह प्रगट नहीं होता है कि वह कालक्रमबद्ध तरीके के साथ लिखता है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यूहन्ना ने अपने सुसमाचार को कालक्रमबद्ध तरीके से लिखा है (यूहन्ना 13:2,21,30,31)। निम्नलिखित घटनाएं फसह के पर्व के दौरान घटीं:

- यह प्रश्न कि चेलों में से कौन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण था (लूका 22:24-27)।
- चेलों के पैर धोना (यूहन्ना 13:1-17; मत्ती 26:20; मरकुस 14:17-18; लूका 22:14-16)।
- यीशु द्वारा विश्वासघात करने वाले चेले के बारे में पहले से बताना और उस पर चेलों की तीव्र प्रतिक्रिया (यूहन्ना 13:18-30; मत्ती 26:21-25; मरकुस 14:18-21; लूका 22:21-23)।
- नयी आज्ञा (यूहन्ना 13:31-35)।
- इनकार किये जाने के बारे में पूर्वानुमान (यूहन्ना 13:36-38; मत्ती 26:34-35; मरकुस 14:29-31; लूका 22:33-34)।
- प्रभु भोज का जन्म (मत्ती 26:26-30; मरकुस 14:22-26; लूका 22:17-20)। यूहन्ना इस भाग को इसलिए नहीं लिखता है क्योंकि बाकि सारे सुसमाचारों में इस घटना का जिक्र कर दिया गया है।
- विदाई सम्बोधन और महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना अध्याय 14-17)।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 13:1-38 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

खोज 1. यीशु और यहूदा के बीच सम्बन्ध।

(1) यहूदा एक ढोंगी था।

यूहन्ना 6:66-71 में, यीशु मसीह के बहुत से चेलों ने उसे छोड़ दिया और फिर मुड़कर नहीं देखा। लेकिन यहूदा यीशु के साथ बना रहा और उसने यीशु का सच्चा चेला होने का ढोंग किया। उससे पहले यीशु पहले ही कह चुके थे कि, "क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना है? लेकिन तब भी तुम में से एक शैतान हैं! "शैतान" का अर्थ है "निन्दक", "झूठा आरोप लगाने वाला"। यीशु ने कहा कि यह व्यकित एक सेवक था या शैतान का औज़ार। उसका शैतानी चरित्र इस बात से साफ जाहिर होता है कि उसने यीशु का सबसे वफादार चेला होने का दिखावा किया। यीशु मसीह की शिक्षाओं और उसके आत्मिक अर्थ से असहमत होकर बहुत से लोग यीशु को छोड़कर चले गये, लेकिन यह आदमी यीशु के साथ बना रहा मानों वह यीशु की हर बात से सहमत था। यहूदा एक कपटी व्यक्ति था (उसने खतरनाक मज़ाक किया)। यीशु को तो पहले से ही पता था कि यहूदा एक न एक दिन ऐसा ही करने वाला है। यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी है जो कलीसिया की विशेष या अलग शिक्षाओं से नफरत करते हैं, लेकिन वे उसी कलीसिया में बने रहते और उसके उजड़ने तक उसे खींचते रहते हैं। यूहन्ना ने जब कई वर्षों के बाद अपने इस सुसमाचार को लिखा, उसने एक विस्तृत व्याख्या करते हुए लिखा कि वह जन यहूदा इस्करियोती था।

(2) यहूदा लालची और एक चोर था।

यूहन्ना 12:4-6 बताता है कि यहूदा एक लालची और एक चोर व्यक्ति था। जब मरियम ने यीशु का अभिषेक करने के लिए महंगा इत्र खरीदकर उस पर उण्डेला, तो यहूदा ने उसके इस काम की आलोचना करते हुए इसे धन की बर्बादी करार दिया। उसने कहा, "यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों नहीं दिया गया? यह इत्र एक व्यक्ति की पूरे एक वर्ष की कमाई थी।" यूहन्ना और भी आगे टिप्पणी करते हुए कहा कि "यहूदा ने यह बात इसलिये नहीं कहीं कि उसे कंगालों की चिन्ता थी परन्तु इसलिये कि वह चोर था और उसके पास पैसों की थैली रहती थी और उसमें जो कुछ होता था वह उसे निकाल लेता था। मरियम की उदारता और यहूदा का स्वार्थ दोनों हैरान कर देने वाले हैं।

(3) यहूदा एक विश्वासघाती था।

यूहन्ना 13:2 में वर्णन किया गया है कि किस तरह से यहूदा यीशु को त्यागने वाला था। वहां लिखा है कि, शैतान यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए"। यीशु के बारह चेलों में से, केवल एक आदमी इतना चरित्रहीन था कि उसने पूरी तरह यीशु को पकड़वाने की अपने मन में ठान ली। महायाजक और फरीसियों ने पहले ही यह आदेश दे दिया था कि अगर किसी को भी यीशु के बारे में पता चल जाए, तो वह आकर उन्हें खबर दे ताकि वे जाकर उसे बन्दी बना सकें (यूहन्ना 11:57)। यहूदा ने पहले से इस बात को तय कर लिया था कि वह धोखे से यीशु को शत्रुओं के हाथों में सौंप देगा। उसने यह सौदा केवल 30 चांदी के सिक्कों में तय कर दिया था। चेलों में से किसी अन्य को इस बारे में कोई खबर नहीं थी और सम्भवत: किसी ने इस बात की कल्पना भी नहीं की होगी। शैतान ही ने इस दुष्ट योजना को यहूदा के मन में डाला था (इफिसियों 6:16)। कुछ समय तक यीशु मसीह का एक चेले के रूप में अनुसरण करने के बाद, यहूदा को ऐसा लगने लगा कि यीशु का चेला बने रहने से ही मेरा काम नहीं चलने वाला है। वह एक लालची व्यक्ति था उसने यीशु से बढ़कर पैसों को प्रेम किया। वह बहुत ज्यादा जोड़ भाग करने वाला जन था, वह नहीं चाहता था कि उसे किसी भी वजह से अराधनालय से निकाल दिया जाए (यूहन्ना 9:22), वरन वह यीशु का पता बता कर यहूदी अधिकारियों के मन में अपने लिए एक सुरक्षित स्थान बनाना चाहता था।

(4) यहूदा चुना हुआ तो था, लेकिन धन्य नहीं।

यूहन्ना 13:17-18 में, यीशु ने अपने चेलों से कहा, कि यदि वे यीशु की कही बातों पर चलें तो वे धन्य होगें। उसके बाद उसने कहा, "मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता: जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ परन्तु यह इसलिये है कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो कि, 'जो मेरी रोटी खाता है, उस ने मुझ पर लात उठाई'।"

जब यीशु ने लूका 6:12-13 में प्रार्थना के साथ बारह चेलों का चुनाव किया, उस समय उसने यहूदा को चुनकर कोई गलती नहीं की थी। यीशु मसीह साफ साफ कहते हैं, कि "मैं जानता हूँ कि मैं ने किस प्रकार के जन को चुना है"। वह उन लोगों को जानता था कि उसने किन लोगों को अपने प्रेरित होने को चुना है, जिन्हें वह संसार भर में अपनी गवाही देने के लिए भेजने पर था। लेकिन वह यहूदा के हृदय और मन को भी जानता था। उसने यहूदा को एक विशेष मकसद से चुना था। उसने उसे उद्धार की योजना में एक भाग होने के लिए चुना था। वह पहले से ही जानता था कि यहूदा एक ढोंगी है और उस पर किसी भी तरह से भरोसा नहीं किया जा सकता। लेकिन उसने यहूदा को इसलिए चुना कि उसमें होकर पुराने नियम की एक भविष्यवाणी पूरी हो सकें।

यह भविष्यद्वाणी भजन संहिता 41:9 में लिखी हुई है। इसमें दाऊद अपने सलाहकार अहितोपेल, या उसके जैसे किसी अन्य व्यक्ति के बारे में लिखता है, जिसने उसी के विरूद्ध एक षड़यन्त्र रचा। 2 शमूएल 15-17 में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार अहितोपेल और अबशालोम ने मिलकर दाऊद को मारने का षड़यन्त्र तैयार किया। भजन 55:12-14 में, दाऊद ने कहा, कि उसकी नामधराई करने वाला और उसके विरूद्ध खड़ा होने वाला कोई उसका दुश्मन नहीं था, लेकिन खुद उसके सलाहकार और मित्र ने उसे से विश्वासघात किया है। वह "मेरा मित्र और मेरी जान पहिचान का था, हम दोनों आपस में कैसी मीठी मीठी बातें करते थे, हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे।" दाऊद हमेशा इस व्यक्ति की भलाई चाहता था। इस आदमी ने दाऊद की रोटी खाई थी, फिर भी उसने अचानक से दाऊद को लात मार दी, जिस प्रकार से एक घोड़ा अपने मालिक को बिना बताएं लात मार देता है उसी प्रकार उसने उसे बुरी तरह लात मार दी। इसलिए दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वह अहितोपेल के जैसे लोगों की सलाह को दुविधा में डालकर उनके मुंह की बातों को विफल कर दे। भजन 55:9-14 बताता है कि, अहितोपेल के जैसी सलाह कड़ा विरोध और आकस्मिक परिवर्तन की मांग करता है। यह भविष्यवाणी निश्चय तौर पर यहूदा के लिए उपयुक्त साबित होती है। उसने यीशु मसीह को अन्त में चूमने तक दोस्ती का मुखौटा चढ़ा कर रखा। चेलों में से किसी का शक यहूदा पर नहीं गया। यहूदा ढोंगी, अवसर वादी था जिसे दण्ड मिलना ही चाहिए था। यीशु मसीह ने उसे विश्वासघात की भविष्यद्वाणी को पूरा करने के लिए ही चुना था।

(5) यहूदा अपने कामों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार था।

यूहन्ना 13:19 में यीशु ने कहा, "मैं उसके होने से पहले तुम्हें जताए देता हूं कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ।" यीशु ने यह बात दो कारणों से कही: वह यहूदा को चेतावनी देना चाहता और दूसरे चेलों के विश्वास को और मज़बूती प्रदान करना चाहता था। यीशु ने यहूदा को पहले भी चिताया था और वह उसे एक बार फिर से चिताते हुए कहता है कि अगर वह अपने गुप्त व बुरी योजनाओं को पूरा करने में लगा रहेगा तो वह कभी धन्य नहीं होगा। यहूदा को यीशु की बातों पर विचार करना चाहिए था। यीशु ने यह बात उसके कामों की जिम्मेदारी पूरी तरह से उस पर डालने के लिए कही थी। लेकिन यीशु ने यह बात दूसरे चेलों के विश्वास का मज़बूत करने के लिए भी कहा। वह जानता था कि यहूदा के विश्वासघात के बारें में सुनकर सारे चेले विचलित हो जाएंगें जिससे उनका विश्वास कमजोर होगा। हो सकता

है कि वे यीशु पर और यीशु में पूरी होने वाली परमेश्वर पिता की योजना पर सन्देह करने लगें। लेकिन जब उनको पता चलेगा कि यहूदा एक विश्वासघाती था तो वे यह भी जान जाएगें कि इन सारी बातों का यीशु मसीह को पहले से ही पता था। वे यह भी जान जाएगें कि वहां पर कोई कुण्ठित नहीं हो रहा था वरन परमेश्वर की योजना पूरी हो रही थी। यीशु ने उनसे यह बात विश्वासघात, दोषारोपण और क्रूस दिये जाने से पहले कही थी, ताकि उसके चेले लगातार यह विश्वास करें कि उसने जो कुछ अपने बारे में कहा था वह सब सच था। यीशु मसीह महान मैं जो हूँ सो हूँ था!

(6) यहूदा दुष्टात्मा से ग्रसित हो गया।

यूहन्ना 13:27 में लिखा है, "शैतान यहूदा में प्रवेश कर गया"। शैतान ने इस समय तक यहूदा के हृदय और मन में पैसों के लिए यीशु को पकड़वाने का विचार डाल दिया था। यहूदा ने शैतान के विचारों का सामना नहीं किया, वरन वह उसके सुझावों पर अमल करने लगा। उसके बाद शैतान ने उसके हृदय में घर कर लिया। यह काम उन अविश्वासियों के साथ होता है जो शैतान का सामना नहीं करते। शैतान ने विश्वासघात करने वाले के प्राणों पर पूरी तरह से कब्ज़ा कर लिया। अब यहूदा एक कठोर दिल मनुष्य बन गया था। वह यीशु की चेतावनी सुनकर भी अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ। अब किसी भी प्रकार की कोई चेतावनी या नसीहत उसके लिए कोई मायने नहीं रखती थी। फसह के भोज के अन्त में, यीशु ने यहूदा से कहा, "जो करना है, जल्दी कर"। हालांकि यूहन्ना और पतरस इस खबर को सुनकर हैरान थे कि यहूदा एक विश्वासघाती है, लेकिन अब भी उन्हें इस बात का बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि यहूदा वास्तव में क्या करने जा रहा है। यहूदा इतना शातिर ढोंगी था, कि किसी भी चेले को कभी उस पर शक ही नहीं हुआ। लेकिन यहूदा जानता था, कि उसकी चोरी पकड़ी गयी है और वह तुरन्त अपने काम को अन्ज़ाम देने के लिए चला गया (यूहन्ना 13:27-30)।

खोज 2. यीशु और पतरस के बीच सम्बन्ध।

यूहन्ना 13:33 में, यीशु ने कहा, "मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ... जहां मैं जाता हूँ, वहां तुम नहीं आ सकते हो"। पतरस इन बातों को सुनकर बड़ा परेशान हो गया और उसने यीशु से पूछा, "हे प्रभु, तू कहां जाता है?" यीशु ने पतरस को विस्तार पूर्वक बताया कि जहां वह जा रहा है पतरस वहां अभी उसके साथ नहीं जा सकता लेकिन बाद में वह भी वहां आ जाएगा। यीशु स्वर्ग में जाने की बात कर रहा था लेकिन, पतरस उसकी बात नहीं समझ पाया। परमेश्वर की योजना के हिसाब से अभी पतरस की मृत्यु का समय नहीं आया था। पतरस ने कहा, कि चाहे सारे चेले यीशु को छोड़कर चले जाएं लेकिन वह यीशु को छोड़कर कभी नहीं जाएगा (मरकुस 14:29)। उसने कहा,"मैं कभी तेरा इनकार नहीं करूंगा" (मरकुस 14:31), "मैं तो तेरे लिए अपना प्राण भी दे सकता हूँ (यूहन्ना 13:37)। पतरस अपने आप को नहीं जानता था। वह अधीर था और तुरन्त यीशु के कष्टों को सहभागी होना चाहता था! यीशु ने पतरस से कहा, कि घमण्ड करने के बाद भी परतस वही कामों को करेगा जिन कामों को न करने पर वह फूल रहा है। पतरस को अपने ऊपर बहुत विश्वास था इसलिए उसने यीशु की बातों पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। पतरस सोचता था कि वह यीशु के लिए अपने प्राण दे देगा, लेकिन हकीकत यह थी कि यीशु पतरस के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाला था!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये यूहन्ना 13:1-38 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

13:1-2

प्रश्न 1. यहूदी फसह का भोज कब खाते हैं?

ध्यान दें। कई मसीही प्रश्न करते हैं: "कि फसह का भोज वीरवार की शाम को (15वीं निसान) को खाया यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने से पहले खाया गया था (15वी निसान शुक्रवार को) जैसा कि सिनोप्टिक सुसमाचार बताते हैं (मत्ती 26:17; मरकुस 14:12; लूका 22:11,24,15) या फसह का अन्तिम भोज यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाये जाने के *बाद* शुक्रवार की शाम (16वीं निसान) को खाया गया था जैसा कि यूहन्ना वर्णन करता है (यूहन्ना 18:28)? सिनोप्टिक सुसमाचार और यूहन्ना रचित सुसमाचार के बीच मतभेद नज़र आता है। और दोनों ही दृष्टिकोण एक समय पर ठीक नहीं हो सकते।

लेकिन अन्य मसीही लोग कहते हैं, यूहन्ना रचित सुसमाचार तथा अन्य सुसमाचारों में से कोई भी गलत नहीं था क्योंकि चारों सुसमाचार बताते हैं कि फसह का भोजन सभी यहूदियों द्वारा अपने नियमित समय और दिन में खाया गया था अर्थात 15वीं निसान की शाम को, जिसे खाने वालों में यीशु और उसके चेले भी शामिल थे, और "फसह के भोज" का विस्तृत वर्णन हम यूहन्ना 18:28 में पाते हैं।

पुराने नियम में दी गयी व्यवस्था में फसह और अखमीरी रोटी से सम्बन्धित शिक्षा प्रदान की गयी है (लैव्यव्यवस्था 23:5-6)।

- वीरवार के पूरे दिन (14वीं निसान) में फसह के भोजन से सम्बन्धित बहुत सी *तैयारियां* की जाती थी।
- अखमीरी रोटी का पर्व वास्तव में 15वीं से 21वीं निसान तक मनाया जाता था।
- एक नया दिन सूर्य अस्त होने से प्रारम्भ हो जाता है। सही मायनों में फसह का *भोज* हमेशा अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन खाया जाता था, जो, सदैव 15वीं निसान को वीरवार की शाम हुआ करता था (निर्गमन 12:8; एज्रा 6:21-22)।

जो लोग हनन्याह, कैफा और महासभा के सामने वीरवार और शुक्रवार के बीच की रात पर यीशु पर दोष लगा रहे थे, वे शुक्रवार को तड़के ही यीशु को पिलातुस के पास ले आये। वे वीरवार और शुक्रवार के बीच की रात में यीशु पर दोष लगाने में इतने व्यस्त थे कि उन्हें वीरवार की शाम को फसह का भोज खाने का

समय ही नहीं मिला। उन्होंने पिलातुस के आंगन में इसलिए प्रवेश किया क्योंकि वे नियत विधान के तहत अशुद्ध नहीं ठहरना चाहते थे, क्योंकि ऐसा करने से वे शुक्रवार की शाम को फसह खा सकते थे (यूहन्ना 18:8)। हालांकि बाकि दूसरे यहूदियों, यीशु और चेलों ने नियत समय पर फसह को भोज 15वीं निसान अर्थात वीरवार की खाम को खा लिया था, लेकिन इन यहूदियों ने तब तक इन्तजार किया जब तक कि यहूदा ने यीशु को पकड़वा नही दिया और वे पूरी रात हनन्याह, कैफा और महासभा के सामने यीशु पर दोष लगाते रहे।

और शुक्रवार के दिन वे यीशु पर दोष लगाने के लिए पिलातुस, हेरोदेस के और अन्ततः पिलातुस के सामने ले गये। इन यहूदियों ने रोमियों के न्यायालय में जाने से इनकार कर दिया क्योंकि वे, शुक्रवार की शाम को फसह का भोज खाने से पहले, (जो एक दिन बाद था) "अपने आपको व्यवस्था के अनुसार शुद्ध" ठहराना चाहते थे! वे व्यवस्था के आधार पर अशुद्ध ठहरने को (लूका 11:39,44; प्रेरितों 10:28; 11:3) नैतिक अशुद्धता से बुरा माना करते थे (उदारहण के लिए, किसी निर्दोष को घात करना, निर्गमन 20:13)! उनका उद्देश्य केवल यीशु मसीह से पीछा छुड़ाना था (यूहन्ना 11:50,57)। यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़वाकर ही उन्होंने, अपना फसह खाया (फसह का मेम्ना)। उन यहूदियों को इस बात का बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि जो मेम्ना वह खा रहे हैं वह यीशु का ही प्रतीक है (1 कुरिन्थियों 5:7)!

13:4-17

प्रश्न 2. **यीशु का अपने चेलों के पैर धोने का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें।

(1) पैरों को धोना भविष्य में सेवा करने के लिए एक सबक बनने जा रहा था।

यीशु और उसके चेले बैतनिय्याह से होकर गुजरे थे और उनके पाँव मिटटी से गन्दे हो गये थे। ऐसी परिस्थितियों में, सामान्य तौर पर इस्राएल के घरों में सबसे तुच्छ समझा जाने वाला सेवक या दास सबसे गन्दे या घिन आने वाले कामों को करता था जिसमें खाने से पहले मेहमानों के गन्दे पैरों को धोना भी शामिल था। वर्षों पहले, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले एक तुच्छ दास के रूप में यीशु के सामने घुटने टेककर, उसके फीतों को खोला और उसके पैरों को धोया था! लेकिन अब उपरौठी कोठरी में कोई सेवक दूसरों के पांवों को धोने के लिए तैयार नहीं था जब चेले उस कमरे में घुसे होगें तो उन्होंने पानी का बर्तन और तौलिया जरूर देखा होगा, लेकिन कोई भी अपने आप को छोटा दास बनाने के लिये तैयार नहीं था! सभी चेलों को अपने ऊपर बहुत घमण्ड था। लूका 22 में, लूका बताता है कि किस प्रकार चेले आपस में बहस कर रहे कि उनमें सबसे बड़ा कौन है। और यह बहस शायद इसलिए भी चलती रही क्योंकि उन्हें भोजन की मेज पर क्रम में बैठना था। अतः यीशु और उसके सभी चेले टेक लगाकर मेज़ के चारों ओर बैठ गये और उनके पैर गन्दे थ। और यद्यपि यीशु मसीह यह जानते थे कि वह परमेश्वर के इकलौते पुत्र है और वह सारे संसार के सृष्टिकर्ता हैं, फिर भी वह उठे, उन्होंने अंगोछे से अपनी कमर कसी, और चेलों के पांव धोने शुरू कर दिये।

(2) शरीर का धोना धर्मी ठहराये जाने का प्रतीक है।

शरीर को धोने का एक प्याले से पानी को किसी जन के ऊपर पानी डालने के द्वारा किया जाता था। पूरे शरीर का धोया जाना मसीह की निन्दा किये जाने के समय में मसीह द्वारा पूरे किये गये उद्धार के कामों को दर्शाता है, जिसकी वजह से सबको धार्मिकता (पापों से क्षमा प्राप्त हुई है)। मसीह की निन्दा में उसका देहधारण करना (अर्थात निष्पाप अवस्था में मनुष्य के समान मनुष्य बनना); उसकी नम्र सेवा (मरकुस

10:45); मनुष्य द्वारा उसको अस्विकृत किया जाना, उसके कष्ट और अन्त में क्रूस पर उसकी मृत्यु (फिलिप्पियों 2:8) शामिल हैं।

बाइबल में इस बात का जिक्र नहीं किया गया है कि उसने किस क्रम में चेलों के पैर धोये थे। उसमें केवल यह लिखा गया है कि जब वह पतरस के पास आया तब क्या हुआ। हो सकता है कि बाकि सारे चेलों को भी शर्मिन्दगी महसूस हुई हो कि यीशु उनके पांव धो रहा था, लेकिन पतरस, ने हमेशा की तरह अधीर होकर, हैरानी के साथ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। यीशु ने केवल उनसे यह कहा कि वह जो काम अभी कर रहा है उसे वे बाद में समझेगें(यूहन्ना 13:7), अर्थात उसकी मृत्यु, उसके पुनरूत्थान और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद समझेगें। *और वास्तव में उसके द्वारा धोये जाने का अर्थ चेलों को बाद ही में समझ में आया।*

पहले तो पतरस ने अपने पांव धुलवाने से इनकार कर दिया। फिर यीशु ने उस से कहा, "अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं"(यूहन्ना 13:8)। यीशु का मतलब था, कि यदि वह पतरस को अपनी विनम्रता में होकर किये गये उद्धार के कामों द्वारा न धोये, जिसमें पांव धोना एक छोटा सा भाग था, तो पतरस उस उद्धार के परिणाम का भाग नहीं बन पाएगा। यीशु ने आगे कहा, जो व्यक्ति पहले से नहा चुका हो (ग्रीक: लोउओ) उसे सिर्फ अपने पैरों को (ग्रीक: निपटो) ही धोने की आवश्यकता है; क्योंकि उसका पूरा शरीर शुद्ध है"(यूहन्ना 13:10)। पूरे शरीर के धोये जाने का अर्थ उद्धार के निमित्त मसीह का सम्पूर्ण कार्य है, जिस नया जन्म या धर्मी ठहराया जाना भी कहा जाता है। मसीह का लहू एक विश्वासी के सारे पापों को धोता (1यूहन्ना 1:7; प्रेरितों 22:16) और उसे पूरी तरह से धर्मी ठहराता है (2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 3:18)।

(3) पांव का धोना धर्मी ठहराये जाने को प्रगट करता है।

पूरा स्नान करना दास के रूप में यीशु मसीह द्वारा किये गये उद्धार के कामों को प्रतीक है, जिसे धर्मी ठहराया जाना भी कहा जाता है। पावों को धोया जाना किसी व्यक्ति के नया जन्म पाने या धर्मी ठहराये जाने के बाद उसके उद्धार के निमित्त किया जाने वाला नियमित काम है। जिसे पवित्रीकरण भी कहा जाता है। जैसे ही पतरस ने यीशु द्वारा उसके पैरों को धोये जाने का अर्थ बताया, पतरस तुरन्त उल्टी ही प्रतिक्रिया व्यक्त की और वह चाहता था कि यीशु उसे सिर से लेकर पैरों तक पूरा धो डाले। पतरस ने सोचा कि जिस्म का जितना ज्यादा हिस्सा धुलेगा, परमेश्वर से प्राप्त होने वाले आशीष उतनी ही बड़ी होगी।

हालांकि यीशु ने शारीरिक शुद्धिकरण की बात नहीं वरन *आत्मिक शुद्धिकरण* की बात की थी!

- यूहन्ना 3 में, यीशु ने *आत्मिक नये जन्म* के बारे में बताया
- यूहन्ना 4 में यीशु ने *आत्मिक जल* के बारे में बताया
- यूहन्ना 6 में *आत्मिक रोटी* के बारे में
- और अब यूहन्ना 13 में उसने *आत्मिक शुद्धिकरण* के बारे में बताया।

और यीशु लगातार बोले, "जो नहो चुका है उसे पाँव के सिवाय और कुछ धोने की आवश्यकता नहीं, परन्तु वह बिलकुल शुद्ध है; और तुम शुद्ध हो, परन्तु सब के सब नहीं।" इस्राएल में यदि किसी व्यक्ति ने भोज में जाने से पहले नहा लिया हो तो उसे भोज में पहुंचने पर दोबारा नहाने की जरूरत नहीं होती। वह केवल अपने पाँव धोकर भोजन कर सकता है।

यीशु आत्मिक स्नान के बारे में (नया जन्म या धर्मी ठहराये जाने के बारे में) तथा आत्मिक तौर पर पाँवों के धोये जाने के(पापों से शुद्धिकरण या पवित्रीकरण) बारे में बात कर रहा था। यहूदा को छोड़, बाकि सारे चेलों ने यीशु की बातों पर विश्वास किया और *वे सब पहले ही पूरी तरह से आत्मिक तौर पर शुद्ध हो चुके थे* अर्थात नया जन्म पा चुके थे(यूहन्ना 13:10; यूहन्ना 15:3)। ये यीशु द्वारा प्रदान किये गये उद्धार के *पहले से ही भागीदार बन चुके थे।* अब चेलों को केवल अपने "पाँवों को धुलवाने" की जरूरत थी। उनको नया जन्म प्राप्त करने तथा धर्मी ठहरने के बाद केवल बाद में किये गये पापों से क्षमा प्राप्त करने की जरूरत थी(1 यूहन्ना 1:9)। इस तरीके से वे और भी अधिक पवित्र बन जाते हैं।

(4) निष्कर्ष। उसका पाँव धोना तीन महत्वपूर्ण बातों को सिखाता है।

- पावों का धोया जाना यीशु मसीह की निन्दा और कष्टों को दर्शाता है, खास तौर पर उसकी ज़मीनी सेवाकाई के दौरान एक दास या नौकर के रूप में उसके कार्य और उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना जिसने उसे अपराधी घोषित कर दिया। (यशायाह 53:12; लूका 22:37; फिलिप्पियों 2:5-8)।
- पाँवों को धोया जाना हमेशा के लिए किये गये प्रायश्चित का और सक्रिय पवित्रीकरण का प्रतीक है। यह कार्य दर्शाता है कि यीशु का जीवन व उसकी मृत्यु हमेशा के लिए अपने लागों के दोषों के लिए प्रायश्चित करता और पवित्र आत्मा की सहायता द्वारा पवित्रीकरण का काम लगातार करता है। (मरकुस 10:45; इब्रानियों 10:1.,14)।
- पावों का धोया जाना सेवाकाई के लिए एक सबक है। यह एक उदाहरण है जिसका सारे मसीहियों को अनुसरण करना चाहिए। चेले इस समय पर तीसरे मतलब को समझने लगे। लेकिन पहले दो मतलबों को वे केवल पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद ही समझ पाये। यीशु मसीह ने एक दूसरे के पैर धोने की किसी प्रथा, रीति या आज्ञा का आरम्भ नहीं किया था। उसने इस काम को सेवा करने का "नमूना" कहा, जिसे उसने अपने चेलों की आखों के सामने करके दिखाया था। परमेश्वर के राज्य में नम्र बनकर की गयी सेवाद्वारा ही किसी व्यक्ति की महानता को नापा जाता है-उसके पद, उसकी शक्ति या कीर्ति से नहीं, वरन उन कामों को करने की इच्छा से जो दूसरे करना नहीं चाहते या फिर कर नहीं सकते! विनम्रता के साथ सेवा महान आज्ञा "जिस तरह से मसीह ने हम से प्रेम किया है, उसी रीति से हम एक दूसरे को प्रेम करें" के लिए एक दृष्टान्त है। मैंने एक दास होने का संकल्प किया है। मैं गन्दे या तुच्छ कामों को करने में पहले व्यक्ति होना चाहता हूँ, जिन्हें कोई और करना पसन्द नहीं करता है। मैं यीशु के पदचिन्हों पर चलना चाहता हूँ।

13:34-35

प्रश्न 3. इस आज्ञा को "नयी" आज्ञा क्यों कहा गया?

ध्यान दें। परमेश्वर को अपने सारे मन और अपने सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम रखना, यह आज्ञा तो पहले से ही पुराने नियम में विद्यमान थी (व्यव 6:5; लैव्य 19:18)। लेकिन यह आज्ञा कहती है कि "जैसे मैंने तुम्हें प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को प्रेम करो"। हालांकि इस आज्ञा की मूल विषय वस्तु नहीं बदली है, लेकिन प्रेम करने का एक आदर्श हमारे सामने रख दिया गया है। यह आज्ञा केवल इसलिए नयी है क्योंकि यीशु अपने चेलों से एक दूसरे को ठीक उसी तरह प्रेम करने की मांग कर रहा है *जैसे उसने उनसे प्रेम किया था!* जिस तरह उसने लगातार, आत्म-त्याग के साथ प्रेम करके नमूना दिखाया था ठीक वैसा ही स्वभाव और रिश्ता चेलों का एक दूसरे को प्रेम करते समय होना चाहिए।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 13:1-38 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 13:1-38 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

13:4-17। ऐसे काम करने के लिए समर्पण जो कोई और नहीं करना चाहता हो या कर न सकता हो।
13:4-17। वचनवद्ध हो कि जहां कहीं सेवा की जरूरत होगी वहां आप सबसे पहले उपलब्ध होगें।
13:34-35। परमेश्वर को प्रेम करने तथा मसीह के समान अपने पड़ोसी को प्रेम करने की आज्ञा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लें।

2. यूहन्ना 13:1-38 से व्यक्तिगत अनुप्रयोंगों के उदाहरण।

पतरस के समान, मैं कई बार बड़ी बड़ी योजनाएं बनाता और शेखी मारता हूँ, लेकिन वास्तविकता में मैं अपने आपको नहीं जानता! लेकिन मैं याद रखना चाहता हूँ कि जो *मैं* यीशु के लिए करूंगा वह महत्वपूर्ण नहीं है, वरन महत्वपूर्ण वह काम हैं जो *उसने* मेरे लिए किया है! वह मेरे लिए मरा! इस बात ने मुझे नम्र बनाना चाहिए और मुझे अहसास दिलाना चाहिए कि बिना यीशु के मैं कितना असहाय हूँ!

इस बात ने भी मुझ पर गहरी छाप छोड़ी है कि यहूदा द्वारा यीशु को पकड़वाये जाने, शत्रुओं के सामने बिना किसी कारण उसपे झूठे आरोप लगाये जाने और निर्दोष होने पर भी उसे क्रूस पर सजा दिये जाने से भी वह निराशा नहीं हुई, वरन इन सभी कामों के द्वारा परमेश्वर की योजना पूरी हुई! परमेश्वर अब भी हर चीज पर नियन्त्रण रखता है और इस संसार में कोई की चीज उसकी योजना को पूरा होने से नहीं रोक सकती। इसलिए मेरे साथ जो भी कुछ हो रहा है वह कोई हताशा नहीं वरन परमेश्वर की योजना है। मेरे साथ जो कुछ होता है वह मेरे जीवन में परमेश्वर की एक भली योजना का एक भाग है!

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 13:1-38 **में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।**

(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों
2. यूहन्ना 13 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 22-24** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(11) यूहन्ना 11:25।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।